AEONIC
LET'S MAKE DREAMS COME TRUE

Aeonic Women Care

WITH SEA BUCKTHORN

BENEFITS

- IT CLEANSES THE BLOOD BY REMOVING IMPURITIES OF THE BLOOD
- IT IS VERY BENEFICIAL IN ELIMINATING THE PROBLEM OF HORMONAL DISORDER.
- IT BOOSTS PHYSICAL AND MENTAL ENERGY & POWER.
- IT INCREASES IMMUNITY.
- IT ALSO HELPS A LOT IN MENSTRUAL PAIN.
- HELPFUL IN WOMEN SEXUAL HEALTH.

INGREDIENTS:

ASHOKA | SHATAVARI | DASHMOOL | MUSTA | TEJPAT | PIPPALI | GUDUCHI | VIDANGA | DEODAR |TULSI | PUNARNAVA | KHAIR | CLOVE | JAMUN | BAHEDA | HALDI | KABAB CHINI JALAP | BACH | SHIVLINGI | HARAR | LODHRA | AMLA | ASHWAGANDHA | KAMALA | BAHERA DARU HARIDA | JATAMANSI | MANGO | BAD CHHAL | BAEL | GINGER | BHRINGRAI | ZEERA

DOSAGE:

20-25 ML.
TWICE DAILY
FOR ADULTS

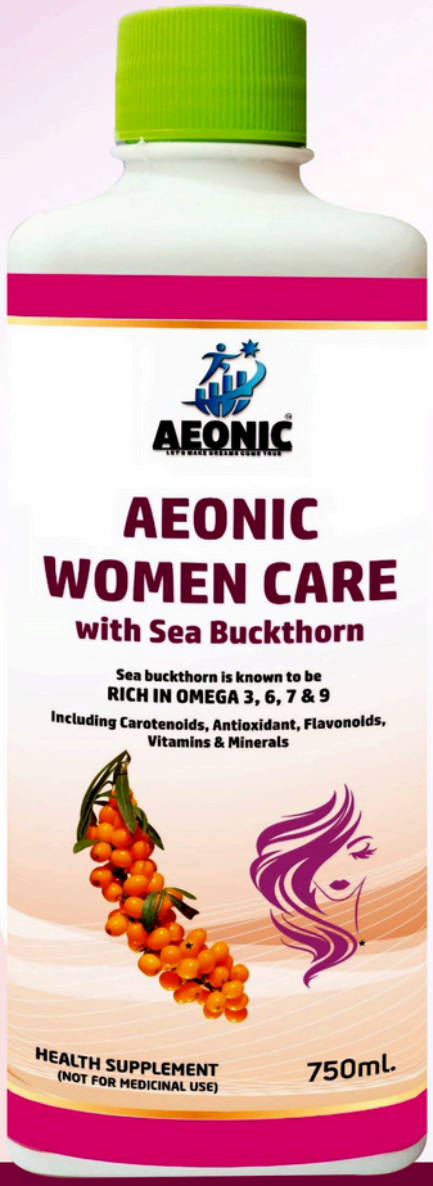

Beware of these GYNAECOLOGICAL DISORDERS

1. VAGINAL INFECTIONS
2. PMS
3. FIBROIDS
4. OVARIAN CYST
5. PCOS
6. HEAVY MENSTRUAL BLEEDING

योनि संक्रमण (Vaginal Infection) क्या है?

योनि संक्रमण, जिसे आमतौर पर वेजाइनल इंफेक्शन कहा जाता है, महिलाओं में होने वाली एक आम समस्या है जिसमें योनि क्षेत्र में संक्रमण हो जाता है। यह संक्रमण विभिन्न प्रकार के बैक्टीरिया, फंगस, या वायरस के कारण हो सकता है। योनि संक्रमण महिलाओं के लिए असुविधाजनक और कभी-कभी दर्दनाक भी हो सकता है।

योनि संक्रमण के प्रकार

- **बैक्टीरियल वेजिनोसिस (Bacterial Vaginosis): यह तब होता है जब योनि में सामान्य रूप से मौजूद बैक्टीरिया असंतुलित हो जाते हैं और संक्रमण का कारण बनते हैं।**
- **योनि का खमीर संक्रमण (Yeast Infection): यह एक फंगल संक्रमण है जो कैंडिडा नामक फंगस के कारण होता है। यह आमतौर पर खुजली, जलन, और सफेद, गाढ़े स्राव का कारण बनता है।**
- **ट्राइकोमोनियासिस (Trichomoniasis): यह एक यौन संचारित संक्रमण (STI) है जो ट्राइकोमोनस नामक परजीवी के कारण होता है।**

योनि संक्रमण के लक्षण

- **खुजली और जलन: योनि और बाहरी जननांग क्षेत्र में खुजली और जलन का अनुभव होना।**
- **असामान्य स्राव: योनि से सफेद, पीला, हरा, या गाढ़ा स्राव होना, जिसमें दुर्गंध भी हो सकती है।**
- **जलन और दर्द: पेशाब करते समय जलन और दर्द होना।**
- **दर्द: संभोग के दौरान दर्द होना।**
- **लालिमा और सूजन: योनि के आसपास की त्वचा में लालिमा और सूजन।**

PMC (प्रीमेंस्ट्रुअल सिंड्रोम)

एक सामान्य स्थिति है जो महिलाओं में मासिक धर्म (पीरियड्स) से पहले होती है। इसमें शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक लक्षण शामिल होते हैं, जो आमतौर पर मासिक धर्म शुरू होने से एक या दो हफ्ते पहले महसूस होते हैं और मासिक धर्म के शुरू होते ही कम हो जाते हैं या खत्म हो जाते हैं।

PMS के लक्षण:

शारीरिक लक्षण:

- पेट में सूजन और दर्द
- स्तनों में कोमलता या दर्द
- सिरदर्द
- जोड़ों और मांसपेशियों में दर्द
- थकान
- नींद में कठिनाई
- त्वचा पर मुँहासे

भावनात्मक और मानसिक लक्षण:

- मूड स्विंग्स (मूड में अचानक बदलाव)
- चिड़चिड़ापन और गुस्सा
- उदासी और डिप्रेशन
- चिंता और तनाव

- ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई
- भूख में बदलाव (अधिक खाने की इच्छा या भूख में कमी)

PMS का कारण:

PMS का मुख्य कारण हार्मोनल बदलाव माना जाता है, जो मासिक धर्म चक्र के दौरान होते हैं। इसके अलावा, न्यूरोट्रांसमीटर (जैसे सेरोटोनिन) के स्तर में बदलाव भी लक्षणों को प्रभावित कर सकता है।

3- FIBROIDS

फाइब्रॉइड्स (Fibroids) को हिंदी में "गर्भाशय में रसौली" या "गर्भाशय की गाँठें" कहा जाता है। ये गर्भाशय (यूटेरस) में बनने वाली असामान्य, गैर-कैंसरयुक्त (सौम्य) गठानें होती हैं। फाइब्रॉइड्स महिलाओं में प्रजनन आयु के दौरान काफी आम होती हैं और उनके आकार और संख्या में भिन्नता हो सकती है।

फाइब्रॉइड्स के लक्षण

फाइब्रॉइड्स के लक्षण उनकी संख्या, आकार, और स्थान पर निर्भर करते हैं। कुछ महिलाओं में फाइब्रॉइड्स के कारण कोई लक्षण नहीं होते, जबकि अन्य में गंभीर लक्षण हो सकते हैं, जैसे:

- असामान्य रूप से भारी या लंबी मासिक धर्म अवधि (रक्तस्राव)
- पेल्विक दर्द या दबाव
- पेट में सूजन या फुलाव
- बार-बार पेशाब आना
- मल त्यागने में कठिनाई
- कमर के निचले हिस्से में दर्द

- गर्भधारण में कठिनाई (बांझपन)
- गर्भपात का खतरा

फाइब्रॉइड्स के कारण

फाइब्रॉइड्स के बनने का सटीक कारण पूरी तरह से ज्ञात नहीं है, लेकिन इसके विकास में हार्मोनल, आनुवंशिक और पर्यावरणीय कारक भूमिका निभा सकते हैं:

- हार्मोनल परिवर्तन: एस्ट्रोजन और प्रोजेस्टेरोन हार्मोन फाइब्रॉइड्स के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। गर्भाशय की दीवार के भीतर ये हार्मोन फाइब्रॉइड्स की कोशिकाओं को तेजी से बढ़ाने के लिए उत्तेजित कर सकते हैं।
- अनुवांशिकता: यदि परिवार में किसी को फाइब्रॉइड्स हैं, तो आपको भी इसके होने का खतरा बढ़ जाता है।
- अन्य कारक: मोटापा, खाने की आदतें, और पर्यावरणीय प्रभाव भी फाइब्रॉइड्स के विकास में योगदान कर सकते हैं।

4- OVARIAN CYST

ओवेरियन सिस्ट (Ovarian Cyst) को हिंदी में "अंडाशय में गांठ" या "अंडाशय में सिस्ट" कहा जाता है। यह एक तरल पदार्थ से भरी थैली होती है जो महिलाओं के अंडाशय (ओवरी) में बनती है। अधिकतर ओवेरियन सिस्ट्स बिना किसी हानि के अपने आप ठीक हो जाती हैं, लेकिन कुछ मामलों में यह गंभीर समस्या भी पैदा कर सकती हैं।

ओवेरियन सिस्ट के प्रकार

- फॉलिक्यूलर सिस्ट: यह सबसे सामान्य प्रकार की सिस्ट होती है जो ओव्यूलेशन (अंडोत्सर्ग) के दौरान बनती है। अंडाणु (एग) निकलने के बाद अगर फॉलिकल बंद नहीं होता है और उसमें तरल पदार्थ भर जाता है, तो यह सिस्ट बन सकती है।

- कॉर्पस ल्यूटियम सिस्ट: ओव्यूलेशन के बाद फॉलिकल कॉर्पस ल्यूटियम बन जाता है, जो हार्मोन प्रोजेस्टेरोन और एस्ट्रोजन का उत्पादन करता है। कभी-कभी कॉर्पस ल्यूटियम में तरल पदार्थ भर जाता है, जिससे सिस्ट बन जाती है।
- डर्मॉइड सिस्ट: यह एक जटिल प्रकार की सिस्ट होती है जिसमें बाल, त्वचा, या दांत जैसी संरचनाएं पाई जा सकती हैं।
- एंडोमेट्रियोमा: यह सिस्ट तब बनती है जब एंडोमेट्रियल टिश्यू (गर्भाशय की परत) अंडाशय पर विकसित हो जाती है।
- सिस्टेडेनोमा: यह सिस्ट ओवरी की सतह से उत्पन्न होती है और उसमें तरल या म्यूकस हो सकता है।

ओवेरियन सिस्ट के लक्षण

अधिकांश ओवेरियन सिस्ट्स में कोई लक्षण नहीं होते हैं, और ये नियमित चेकअप के दौरान पता लगती हैं। लेकिन कुछ मामलों में निम्नलिखित लक्षण हो सकते हैं:

- पेल्विक दर्द: यह दर्द अचानक और तेज हो सकता है, खासकर सिस्ट के टूटने या फटने पर।
- पीरियड्स में बदलाव: मासिक धर्म की अनियमितता या भारी रक्तस्राव हो सकता है।
- पेट में सूजन या फुलाव
- बार-बार पेशाब आना
- मल त्यागने में कठिनाई
- कमर में दर्द

ओवेरियन सिस्ट के कारण

ओवेरियन सिस्ट्स के विकास का कारण स्पष्ट नहीं होता है, लेकिन कुछ कारक इसे बढ़ावा दे सकते हैं:

- हार्मोनल असंतुलन: हार्मोनल असंतुलन सिस्ट के बनने का एक मुख्य कारण हो सकता है।
- एंडोमेट्रियोसिस: जिन महिलाओं को एंडोमेट्रियोसिस होता है, उनमें सिस्ट बनने का खतरा अधिक होता है।
- गर्भधारण के दौरान: कभी-कभी गर्भधारण के दौरान भी सिस्ट बन सकती है।
- पेल्विक इन्फेक्शन: अगर इन्फेक्शन अंडाशय तक फैल जाता है, तो यह सिस्ट का कारण बन सकता है।

5- PCOC

पीसीओएस (PCOS) या पॉलिसिस्टिक ओवरी सिंड्रोम (Polycystic Ovary Syndrome) एक हार्मोनल विकार है जो महिलाओं में होता है। इस स्थिति में अंडाशय (ओवरी) में छोटे-छोटे सिस्ट (गांठें) बन जाती हैं, जो अंडाशय के सामान्य कार्य में बाधा डालती हैं। यह महिलाओं में मासिक धर्म, गर्भधारण और अन्य शारीरिक प्रक्रियाओं को प्रभावित कर सकता है।

➡ पीसीओएस के कारण:

- हार्मोनल असंतुलन: पीसीओएस में महिलाओं के शरीर में पुरुष हार्मोन (एंड्रोजन) का स्तर बढ़ जाता है, जिससे मासिक धर्म चक्र में गड़बड़ी होती है और अंडाशय में सिस्ट बनते हैं।
- इंसुलिन रेसिस्टेंस: शरीर की कोशिकाएं इंसुलिन का सही ढंग से उपयोग नहीं कर पाती हैं, जिससे रक्त में इंसुलिन का स्तर बढ़ जाता है और यह हार्मोनल असंतुलन का कारण बन सकता है।
- विरासत (जेनेटिक): यदि परिवार में किसी को पीसीओएस हो, तो इस विकार के होने की संभावना बढ़ जाती है।

पीसीओएस के लक्षण:

- मासिक धर्म में अनियमितता: पीरियड्स का देरी से आना या रुक-रुक कर आना।
- अधिक बाल उगना: चेहरे, छाती, पेट, और पीठ पर बालों का बढ़ना (हिर्सुटिज्म)।
- मुहांसे: चेहरे और शरीर पर अधिक मुहांसे होना।
- वजन बढ़ना: वजन का तेजी से बढ़ना, विशेषकर पेट के आसपास।
- गर्भधारण में कठिनाई: ओव्यूलेशन की समस्या के कारण गर्भधारण में कठिनाई हो सकती है।
- बालों का झड़ना: सिर के बाल पतले होना या झड़ना।
- डार्क पैचेज: गर्दन, अंडरआर्म्स, और जांघों के आसपास काले धब्बे बनना (Acanthosis nigricans)।

पीसीओएस का प्रभाव:

- पीसीओएस के दीर्घकालिक प्रभावों में टाइप 2 मधुमेह, हृदय रोग, उच्च रक्तचाप, और गर्भावस्था में जटिलताएं शामिल हो सकती हैं।

6- HEAVY MENSTRUAL BLEEDING

भारी मासिक धर्म रक्तस्राव, जिसे चिकित्सा भाषा में मेनोर्रजिया (Menorrhagia) कहा जाता है, एक ऐसी स्थिति है जिसमें महिलाओं को सामान्य से अधिक या लंबे समय तक मासिक धर्म के दौरान अत्यधिक रक्तस्राव होता है। यह स्थिति महिलाओं के दैनिक जीवन को प्रभावित कर सकती है और कमजोरी, थकान, और एनीमिया (खून की कमी) का कारण बन सकती है।

भारी मासिक धर्म रक्तस्राव के लक्षण

- सप्ताह से अधिक समय तक चलने वाला मासिक धर्म
- बार-बार सैनेटरी पैड या टैम्पॉन बदलने की आवश्यकता
- रात में सैनेटरी प्रोटेक्शन बदलने की आवश्यकता
- खून के थक्के निकलना, जो 1 सेमी से बड़े होते हैं
- मासिक धर्म के दौरान तीव्र पेल्विक दर्द
- सामान्य दैनिक गतिविधियों को करने में कठिनाई
- थकान या सांस की कमी (खासकर अगर एनीमिया हो)

भारी मासिक धर्म रक्तस्राव के कारण

- हार्मोनल असंतुलन: एस्ट्रोजन और प्रोजेस्टेरोन हार्मोन के असंतुलन के कारण गर्भाशय की परत अत्यधिक मोटी हो जाती है, जिससे अधिक रक्तस्राव होता है।
- यूटराइन फाइब्रॉइड्स: गर्भाशय में गैर-घातक ट्यूमर जो भारी रक्तस्राव का कारण बन सकते हैं।
- एंडोमेट्रियोसिस: एक स्थिति जिसमें गर्भाशय की परत (एंडोमेट्रियम) गर्भाशय के बाहर बढ़ती है।
- एडेनोमायोसिस: जब गर्भाशय की परत गर्भाशय की मांसपेशियों में बढ़ जाती है।
- पॉलीप्स: गर्भाशय की परत में छोटे, गैर-घातक वृद्धि (पॉलीप्स) भी भारी रक्तस्राव का कारण बन सकते हैं।
- गर्भनिरोधक उपकरण (IUD): कुछ महिलाओं में तांबे के IUD के उपयोग से भी भारी मासिक धर्म हो सकता है।
- गर्भाशय या सर्विक्स का कैंसर: हालांकि दुर्लभ, लेकिन कैंसर भी भारी मासिक धर्म का कारण हो सकता है।
- रक्तस्राव विकार: कुछ महिलाओं में खून जमने में समस्या होती है, जिससे भारी मासिक धर्म हो सकता है।
- गर्भपात: कभी-कभी, भारी रक्तस्राव गर्भपात का संकेत भी हो सकता है।

7- WHITE DISCHARGE

महिलाओं में सफेद स्राव (White Discharge), जिसे ल्यूकोरिया (Leukorrhea) भी कहा जाता है, एक सामान्य शारीरिक प्रक्रिया है। यह योनि की सफाई और संक्रमण से बचाने में मदद करता है। हालांकि, अगर स्राव की मात्रा, रंग, गंध, या बनावट में बदलाव होता है, तो यह किसी स्वास्थ्य समस्या का संकेत हो सकता है।

सामान्य सफेद स्राव

- ओव्यूलेशन (Ovulation): मासिक धर्म चक्र के मध्य में सफेद, पतला या चिपचिपा स्राव देखा जा सकता है, जो अंडोत्सर्जन का संकेत होता है।
- गर्भावस्था (Pregnancy): गर्भावस्था के दौरान सफेद स्राव में वृद्धि हो सकती है, जो हार्मोनल परिवर्तन के कारण होता है।
- यौन उत्तेजना (Sexual Arousal): यौन उत्तेजना के समय स्राव बढ़ सकता है, जो योनि को नम और लचीला रखने के लिए होता है।
- मासिक धर्म चक्र (Menstrual Cycle): मासिक धर्म से पहले और बाद में भी सफेद स्राव होना सामान्य है।

असामान्य सफेद स्राव

जब सफेद स्राव के साथ अन्य लक्षण, जैसे खुजली, जलन, या दुर्गंध हो, तो यह किसी संक्रमण या स्वास्थ्य समस्या का संकेत हो सकता है।

यीस्ट संक्रमण (Yeast Infection):

- लक्षण: गाढ़ा, दही जैसा सफेद स्राव, खुजली, जलन।
- कारण: योनि में यीस्ट (कैंडिडा) का अधिक विकास।

बैक्टीरियल वेजिनोसिस (Bacterial Vaginosis):

- लक्षण: पतला, मछली जैसी गंध वाला सफेद या ग्रे स्राव।
- कारण: योनि में अच्छे और बुरे बैक्टीरिया का असंतुलन।

यौन संचारित रोग (STIs):

- लक्षण: सफेद स्राव के साथ पीला या हरा स्राव, दर्द, या जलन।
- कारण: क्लैमिडिया, गोनोरिया, ट्राइकोमोनिएसिस जैसी बीमारियां।

हार्मोनल असंतुलन (Hormonal Imbalance):

- लक्षण: स्राव में बदलाव हार्मोनल असंतुलन के कारण हो सकता है, जैसे कि पीसीओएस या गर्भनिरोधक गोलियों का उपयोग।

सफाई की कमी या जलन:

- लक्षण: सफेद स्राव में वृद्धि तंग कपड़े, सुगंधित उत्पादों या अस्वच्छता के कारण हो सकती है।

Thank You

AEONIC
LET'S MAKE DREAMS COME TRUE

Aeonic Women Care

WITH SEA BUCKTHORN

BENEFITS

- IT CLEANSES THE BLOOD BY REMOVING IMPURITIES OF THE BLOOD
- IT IS VERY BENEFICIAL IN ELIMINATING THE PROBLEM OF HORMONAL DISORDER.
- IT BOOSTS PHYSICAL AND MENTAL ENERGY & POWER.
- IT INCREASES IMMUNITY.
- IT ALSO HELPS A LOT IN MENSTRUAL PAIN.
- HELPFUL IN WOMEN SEXUAL HEALTH.

INGREDIENTS:

ASHOKA | SHATAVARI | DASHMOOL | MUSTA | TEJPAT | PIPPALI | GUDUCHI | VIDANGA | DEODAR |TULSI | PUNARNAVA | KHAIR | CLOVE | JAMUN | BAHEDA | HALDI | KABAB CHINI JALAP | BACH | SHIVLINGI | HARAR | LODHRA | AMLA | ASHWAGANDHA | KAMALA | BAHERA DARU HARIDA | JATAMANSI | MANGO | BAD CHHAL | BAEL | GINGER | BHRINGRAI | ZEERA

DOSAGE:

20-25 ML.
TWICE DAILY
FOR ADULTS